प्रातःक्लास 29.3.68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। अपन को आत्मा समझ परमपिता परमात्मा साथ योग लगाने से उनको योगी कहा जाता है। वह है सच्चा योगी ; क्योंकि बाप सच्च है ना। तुम्हारा बुद्धि का योग सच्च के साथ है। वह जो कुछ समझाते हैं सत्य ही समझाते हैं। योगी और भोगी है ना। भोगी भी अनेक प्रकार के होते है, योगी भी अनेक प्रकार के होते हैं। तुम्हारा योग तो एक ही प्रकार का है। उन्हों का समय ही अलग है। तुम्हारा समय भी अलग है। तुम हो पुरुषोत्तम संगमयुग के योगी। और किसी को भी इस संगमयुग का पता नहीं है। पावन योगी हैं या पतित योगी हैं यह भी बच्चे जानते हैं। बाबा तो सभी को बच्चे ही कहते रहते हैं; क्योंकि समझते हैं हम सभी बेहद के आत्माओं का बाप हूं। यह तो समझ की बातें हैं ना। तुम भी समझते हो हम सभी आत्माएं भाई–2 हैं। वह हमारा बाप है। फिर तुम बाप के साथ योग लगाने से पवित्र बनते हो। वह हैं भोगी। तुम हो योगी। तुम बाप को जानते हो। बाप अपना परिचय देते हैं। यह भी तुम समझते हो यह पुरुषोत्तम संगमयुग है। यह तुम्हारे सिवाय और कोई को पता नहीं है। इनका नाम ही है पुरुषोत्तम संगमयुग; इसलिए पुरुषोत्तम अक्षर कभी भी भूलना न चाहिए। पुरुषोत्तम बनने का है। पुरुषोत्तम कहा जाता है ऊँच पवित्र मनुष्य को। ऊँच और पवित्र यह ल.ना. ही थे। अभी टाइम का भी पता तुमको पड़ा है। हर 5000 वर्ष बाद दुनियां पुरानी होती है। फिर उनको नया बनाने बाप आते हैं। अभी हम संगमयुगी ब्राह्मण कुल के हैं। ऊँच ते ऊँच है ब्रह्मा। ब्रह्मा को शरीरधारी दिखलाते हैं। शिवबाबा तो अशरीरी है। बच्चे समझ गये हैं अशरीरी और शारीरिक दोनों का मेल है। उनको तुम कहते हो बाबा। यह वण्डरफुल रथ है ना। इनका गायन भी है। मन्दिर भी बनाते हैं। कोई किस रीति, कोई किस रीति रथ को श्रृंगारते हैं। यह भी बाप ने बताया है बहुत जन्मों के अंत के भी अंत में मैं प्रवेश करता हूं। कितना क्लीयार समझाते हैं। पहले–2 तो भगवानुवाच कहना पड़े। भगवानुवाच मैं बहुत जन्मों के अंत के भी अंत के जन्म में.. ..... यह तो तुम बच्चों ने ही समझा है। और कोई कब समझा न सके। तुम बच्चे भी कब–2 भूल जाते हो पुरुषोत्तम संगमयुग यह अक्षर बहुत ज़रूरी है। यह भी लिटरेचर आदि में लिखना भूल जाते हैं। पुरुषोत्तम अक्षर लिखने से समझेंगे यह पुरुषोत्तम संगमयुग ही कल्याणकारी युग है। युग याद है तो भी समझेंगे हम नई दुनियां के लिए बदल रहे हैं। नई दुनियां में होते हैं देवी–देवताएं। अभी हम संगमयुग पर हैं। भगवान का अभी तुमको पता पड़ा है। संगमयुग को कब भूलो मत। भूलने से सारा ज्ञान ही भूल जाता है। तुम जा(न)ते हो अभी हम बदल रहे हैं। यह दुनियां भी बदल रही है। पुरानी दुनियां बदल नई होती है। बाप कैसे दुनियां को भी बदलते हैं, बच्चों को भी बदलते हैं। बच्चे–2 तो सभी को कहेंगे ना। सारी दुनियां के जो भी आत्माएं हैं सभी का बाप है। सभी का पार्ट इस ड्रामा में है। चक्र भी सिद्ध करना है। हरेक अपना–2 धर्म स्थापन करते हैं। यह देवी–देवता धर्म सिवाय बाप के और कोई स्थापन कर न सके। यह धर्म कोई ब्रह्मा नहीं स्थापन करते हैं। नई दुनियां में देवी–देवता धर्म। यह पुरानी दुनियां में मनुष्य ही मनुष्य है। नई दुनियां में देवी–देवताएं होते हैं। देवताएं पवित्र रहते है। वहां रावण राज्य नहीं होता। बाप तुम बच्चों को रावण राज्य पर जीत पहनाते हैं। खुद नहीं पहनते। बच्चो को ही विजय पहनाते हैं। रावण पर विजय पहनाने से रामराज्य हो ही जाता है। रामराज्य नई दुनियां को, रावणराज्य पुरानी दुनियां को कहा जाता है। पुरानी दु(नियां) और नई दुनियां को तुम बच्चे ही जानते हो। रामराज्य कैसे स्थापन होता है यह तुम बच्चों के सिवाय और कोई जानते ही नहीं। रचयिता बाप बैठ बच्चों को रचना का राज़ समझाते हैं। बाप है रचयिता बीज रूप। बीज को कहा जाता है वृक्षपति। अभी वह तो जड़ बीज है उनको तो ऐसे नहीं समझेंगे। अभी तुम समझते हो बीज जैसे वृक्ष का पति होता है। बीज से ही सारा झाड़ निकलता है। वह है जड़। यह तो फिर है चैतन्य। सत्त–चित आनन्द स्वरूप। मनुष्य सृष्टि का बीज रूप चैतन्य है। उनकी महिमा की जाती है। चैतन्य है; इसलिए उनमें सारा ज्ञान है। मनुष्य सृष्टि रूपी बड़ा झाड़ है। सारी विश्व का कितना बड़ा झाड़ है। कितनी

बड़ी विश्व है। मॉडल कितना छोटा बनाया जाता है। यह तो कितना बड़ा बेहद का झाड़ है मनुष्य सृष्टि का। सभी से बड़ा है। ऊँच ते ऊँच है बाप, नॉलेजफुल। उन झाड़ों की नॉलेज तो बहुतों को होती है। इसकी नॉलेज एक बाप ही देते हैं। अभी तुम्हारी बुद्धि है बेहद में। बाप ने हद की बुद्धि को बदल कर बेहद की बुद्धि दी है। तुम इस सारे वृक्ष को जान गये हो। कितना बड़ा पोलार इस झाड़ को मिला हुआ है। बाप तुम बच्चों को बेहद में ले जाते हैं। यह सारी दुनियां ही पतित है। एक दो कोस अर्थात् हिंसा करने वाले हैं। सारी सृष्टि ही हिंसक है। अभी तुम बच्चों को अभी ज्ञान मिला हुआ है। अहिंसक सिर्फ एक ही धर्म होता है नई दुनियां में। उनको ही राम–राज्य कहा जाता है। पहले नया झाड़ बहुत छोटा होता है। एक धर्म ही होता है। पहले थुर में एक धर्म है। फिर फांउन्टेन(फाउन्डेशन) तीन ट्यूब्स निकलते हैं एक जैसे। यह फांउन्डेशन है आदि सनातन देवी–देवता धर्म का, फिर उनसे तीन ट्यूब्स निकलते हैं । थुर फिर डार–टारियां छोटे कितने निकलते हैं। अभी तो इस झाड़ का थुर ही नहीं है। और कोई झाड़ ऐसा होता नहीं। इनका मिसाल भी बड़ के झाड़ से एक्युरेट है। बड़ का झाड़ बिगर थुर बाकी सारा खड़ा है। थुर है नहीं। सूखता भी नहीं है। सारा झाड़ हरा–भरा है। यह भी कितना बड़ा झाड़ है। बाकी देवी–देवता धर्म का फांउन्डेशन है नहीं। थुर तो यह है ना। रामराज्य अर्थात् देवी–देवता इस थुर में ही आ जाता है। बाप ने समझाया है हम कैसे तीन धर्म स्थापन करते हैं। यह बातें तुम संगमयुगी ब्राह्मण ही समझते हो। तुम ब्राह्मणों का यह है छोटा सा कुल। छोटे–2 मठ–पंथ कितने निकलते है। अरबिन्दो आश्रम है, कितना जल्दी–2 वृद्धि को पाते हैं; क्योंकि उनमें विकार के लिए कोई मना नहीं करते हैं। यहां तो बाप कहते हैं काम महाशत्रु है, उन पर विजय पानी है। ऐसे और कोई कह न सके। नहीं तो उन्हों के पास भी हंगामा हो जाये। यहां तो हैं ही पतित मनुष्य। तो पावन बनने की बात सुनते ही नहीं। कहते हैं विकार बिगर बच्चे कैसे पैदा होंगे? इन बिचारों का भी दोष नहीं है। गीता पाठी कहते हैं भगवानुवाच काम महाशत्रु है, उनको जीतने से जगत–जीत बनेंगे; परन्तु समझते नहीं है। वह जब यह अक्षर सुनाते हैं तो उनको पकड़ना चाहिए ; इसलिए बाबा कहते हैं जैसे हनुमान दर पर जूतों में जाकर बैठता था। बाबा भी कहते हैं जाकर किनारे बैठकर सुनकर आओ। फिर जब यह अक्षर सुनावे तो पूछना चाहिए इनका रहस्य क्या है? जगतजीत तो यह देवताएं थे। देवता बनने लिए तो इन विकारों को छोड़ना पड़े। यह भी तुम ही कह सकते हो। तुम जानते हो अभी रामराज्य की स्थापना हो रही है। महावीर तो तुम हो। इसमें डरने की भी बात नहीं। कोई पत्थर नहीं मारेंगे। बहुत ही प्यार से पूछना चाहिए स्वामी जी, आप ने सुनाया काम महाशत्रु है इन पर जीत पाने से जगतजीत विश्व का मालिक बनेंगे। फिर आप तो यह बताते नहीं कि पवित्र कैसे बनो। अभी तुम बच्चे पवित्रता में रहने वाले महावीर हो। महावीर ही विजयमाला में पिरोये जाते हैं। बाकी यह लोग तो जो सुनाते हैं वह हैं रांग बातें। ऐसे रांग बात सुनने मनुष्यों के कान हिरे हुये हैं। तुमको तो अभी रांग बातें सुननी पसन्द नहीं आती हैं। राइटियस बातें तुम्हारे कानों को अच्छी लगती हैं। हियर नो ईविल। मनुष्यों को सुजाग ज़रूर करना है। भगवान कहते हैं पवित्र बनो। सतयुग में पवित्र देवताएं थे। इस समय मनुष्य पतित हैं ; इसलिए असुर कहा जाता है। ऐसे–2 प्रेम से बैठ समझाना चाहिए। बोलो, हमारे पास भी सतसंग होता है। इसमें भी समझाया जाता है काम महाशत्रु है। अभी पवित्र बनने चाहते हो तो इस युक्ति से बनो। महावीर के लिए दिखाया है रावण भी उनको हिलाये न सके। उनका अर्थ भी कोई नहीं समझते हैं। रामायण मनुष्य कितना पढ़ते हैं। इनमें तो बहुत ग्लानी है। राम की सीता चुराई गई और कृष्ण के लिए कहते हैं खुद रानियों को चुराया था। यह सभी ग्लानी की बातें हैं ना। बाप समझाते हैं कितनी ग्लानी की है। तब ही कहते हैं यदा–2 भारत का ही नाम आता है। बाप आते भी भारत में हैं। यह भारत बहुत भरतू खण्ड था। अभी भरतू खण्ड न होने कारण हिन्दुस्तान नाम रख दिया है। नहीं तो भारत हर बात (में) भरतू था। धन–दौलत, पवित्रता, सुख–शान्ति

सभी से भरतू था। अभी है दुःखों से भरपूर; इसलिए पुकारते हैं हे दुःखहर्ता, सुखकर्ता.....तुम भी कितना खुशी से बाप से पढ़ते हो। ऐसा कौन होगा जो बेहद के बाप से बेहद सुख का वर्सा न लेंगे। पहले–2 तो अलफ़ समझाना है। अलफ़ नही समझने से कुछ भी रहस्य बुद्धि में नहीं आवेगा। बेहद का बाप जो बेहद का वर्सा देते हैं पहले तो उनको जानना चाहिए। बाप का निश्चय बैठ(ठे)तब ही आगे बढ़ना चाहिए। बच्चों को बाप से कुछ भी प्रश्न पूछने की दरकार नहीं है। बाप पतित–पावन है उनको याद करो। बस। याद से ही तुम पावन बन जावेंगे। मुझे बुलाया ही है ; इसलिए। जीवनमुक्ति है भी सेकण्ड की। फिर भी याद की यात्रा समय ले लेती है। मुख्य बात ही याद है। याद की यात्रा में ही विघ्न पड़ती है। आधा कल्प देहअभिमानी रहे हैं तो अभी एक जन्म में देहीअभिमानी बनने में मेहनत है। इसके लिए तो सहज है। तुम बुलाते भी हो बाप–दादा। यह भी समझाते हैं बाप की सवारी हमारे सिर पर है। तो भीसदैव याद नहीं रहती। समझता हूं मैं उनका रथ हूं। शिवबाबा इस रथ पर है। बहुत नज़दीक है। फिर भी बाबा कहते हैं तुम बाबा से जास्ती चार्ट रख सकते हो। इनको जास्ती याद क्यों नहीं पड़े? यह खुद कहते हैं मरे(मेरे)सिर पर तो है ही। इकट्ठे हैं। तो भी यह आ जाता है। मैं ही बैठ समझाता हूं। मैं ही बेहद में टिक जाता हूं । कोई–कोई समय मैं खुद ही समझता हूं में मालिक हूं। मैं मैं हूं। बैटरियों को चार्ज करता हूं। सभी आत्माओं को सर्च–लाइट देता हूं। यह तो बहुत सहज है। मैं खुद बड़ी मिशन हूं। है तो बाबा; परन्तु मैं अपन को समझ लेता हूं। मैं सभी आत्माओं को सर्च–लाइट देता हूं। रेजस देता हूं। सभी आत्माओं को सर्च–लाइट का बल देना है ना। तो अपन को ऐसा समझ लेता हूं। इस होते भी बाबा फिर कह देते हैं तुम बाप के साथ योग में रहने का पुरुषार्थ करते हो और मैं घड़ी मालिक बन जाता हूं। तो यह कोई कायदे अनुसार पुरुषार्थ थोड़े ही हुआ। मैं याद कहां करता हूं? सर्च–लाइट देता हूं। सारी दुनियां के आत्मा को याद करता हूं। यह भी अच्छा है। बाकी यर्थात रीति मैं अपन को आत्मा .....रख सकता हूं। घड़ी वह बन जाता हूं। एक्युरेट राइट तो नहीं है। तुम सभी कुछ भूल कर एक बाप को याद करते हो। और यह फिर सभी कुछ भल अपन को ही समझ खड़ा हो जाता हूं। संग का रंग कहा जाता है ना। तो बाबा के संग का रंग इन पर भी चढ़ जाता है। कहते हैं मैं भी उनके संग के रंग में रंग जाता हूं। यह सब विचार–सागर–मंथन कर तुम बच्चों को समझाते हैं। सारी दुनियां के आत्माओं को सर्चलाइट देता हूं। ताकत देता हूं। ऐसा हो जाता है। बैटरी होकर तो बैटना ही है। तुमको भी सम्पूर्ण बैटरी बनना है। तभी बाबा ने उस दिन भी कहा था मैं भी जैसे बाप बन जाता हूं। बाबा को इससे भी खुशी होती है। बैटरी काम करता हूं। गुरू से मैं भी सीख जाता हूं। बाबा को मज़ा आता है। उस याद की यात्रा में तो विघ्न पड़ती है। इसमें विघ्न नहीं पड़ती है। यह बहुत सहत होता है। उनके संग में बैठा हूं तो खुशी होती है। जो भी आत्माएं हैं (स)भी को बैटरी होकर रेज़स देता हूं। तुम बड़ी बैटरी के साथ योग लगाते हो। मैं उनके साथ होने से उनके संग के रंग में रंग जाता हूं। कायदे सिरे नहीं। बाप कहते हैं मुझे याद करो। मैं फिर बैटरी बन जाता हूं , फिर भी दुनियां को तो भूल जाता हूं ना। देखते हुये कुछ भी देखने में नहीं आता है। बाप के लिए तो दुनियां है ही नहीं। तब तो बैटरी कहा जाता है। तो बाबा को मज़ा आता है। साथ में है तो संग का रंग लग जाता है। फिर भी कोशिश करता हूं बाबा को याद करने की। बहुत उनकी महिमा करता हूं। बहुत प्यार करता हूं। बाबा आप कितने मीठे हो। हमको कल्प–2 कितना सिखलाते हो। फिर आधा कल्प हम आप को याद भी नहीं करेंगे। अभी तो बहुत याद करता हूं। कल हमारे में कुछ भी ज्ञान नहीं था। जिनकी पूजा करते थे हमको थोड़े ही पता था हम यह बन जावेंगे। अभी वण्डर लगता है। योगी बनने से फिर देवी–देवता बन जावेंगे। मेरे यह सभी बच्चे (हैं)। बहुत ही प्यार से सम्भालते हैं। पालना करते हैं। यह भी हमारे समान नर से नारायण बन जावें। यहां आये ही इसलिए हैं। कितना समझाता हूं बाप को याद करो। देवीगुण धारण करो। खान–पान की सम्भाल रखो। नहीं करते

हैं तो समझाता हूं अजन समय पड़ा है। कुछ न कुछ भूलें होती रहती हैं छोटी–बड़ी। प्यार से समझाता हूं। भूलें न करो। किसको दुःख न दो। भूल करते हो तो गोया दुःख देते हो। बाप तो कब दुःख नहीं देते। वह तो डायरैक्शन ही देते हैं मामेकं याद करो तो विकर्म विनाश हों। बहुत मीठा बन जावेंगे। ऐसा (ल.ना.) मीठा बनना है। दैवीगुण धारण करनी है। पवित्र बनो। अपवित्र को आने का हुक्म नहीं है। कब–कब आने देते हैं। वह भी अभी। जब इस तरफ बहुत वृद्धि हो जोवगा तो फिर कह देंगे यह है टॉवर आप प्यूरिटी। टॉवर ऑफ सायलेन्स। ऊँच ते ऊँच है। बाकी दुनियां में तो सभी है झूठ। अपन को आत्मा समझ बाप की याद में रहना है। यह है हाईएस्ट पावर। वहां बड़ी सायलेन्स रहती है। आधा कल्प कोई झगड़ा आदि नहीं होता। यहां तो कितना झगड़ा आदि है। शान्ति हो न सके। शान्ति का धाम है मूलवतन। फिर शरीर धारण कर विश्व में पार्ट बजाने आते हैं। तो वहां भी शान्ति रहती है। आत्मा का स्वधर्म है ही शान्त। अशान्ति कराता है रावण। तुम शान्ति की शिक्षा पाते रहते हो। कोई गुस्से में होते हैं तो अशान्ति कर देते हैं। इस योगबल से तुम्हारे सभी किचड़ा निकल जाता है। याद से कचड़ा भस्म हो जाता है। कट निकल जाती है। बाप कहते हैं कल तो तुमको शिक्षा दी थी। क्या तुम भूल गये हो? 5000 वर्ष की बात है। वह तो लाखों वर्ष कह देते हैं। 99% झूठ। इसलिए कहा ही है झूठी माया झूठी काया.....नई दुनियां में झूठ का नाम नहीं होता। अभी तुमको झूठ और सच्च का फर्क पड़ता है। तुमको बाप ही आकर बतलाते हैं क्या सच्च है, क्या झूठ है। ज्ञान क्या है, भक्ति क्या है। भ्रष्टाचारी किसको, श्रेष्ठाचारी किसको कहा जाता है। भ्रष्टाचारी विकार से पैदा होते हैं। वहां विकार होता ही नहीं। तुम खुद कहते हो सम्पूर्ण निर्विकारी हैं। रावण राज्य ही नहीं। यह तो सहज समझने की बातें हैं। फिर क्या करना चाहिए? और पवित्र ज़रूर बनना ही है। वैश्यालय में वैश्या न बनना चाहिए। वैश्यालय में विषय सागर में गोता खाते रहते हैं; इसलिए बाबा पर्चे भी छपावाये हैं। कलियुगी विकारी हो या सतयुगी निर्विकारी हो? परन्तु बन्दर इन बातों को भी समझते थोड़े ही हैं। कोटों में कोऊ ही निकलेगा। इस कुल होगा तो उनको जंचेगा। ख़्याल में आवेगा जाकर उनका अर्थ समझूं। थोड़ा टच होगा यह लिखत तो राइट है। बरोबर विकारी तो सारी दुनियां ही है। दूसरी बात म्यूज़ियम में तो बहुत मनुष्य आते हैं तो बहुतों को देख मनुष्य समझते यहां ज़रूर कुछ है। बड़ी संस्था है। ऐसे चित्र आदि तो कोई निकाल न सके। किसकी बुद्धि में बैठ न सके। विराट रूप का चित्र कितना अच्छा है। मनुष्य पुनर्जन्म तो ज़रूर लेते हैं। वह कहते हैं 84 लाख जन्म। हम कहते हैं 84 जन्म। कोई तो पुनर्जन्म को ही नहीं मानते हैं। ईश्वर पुनर्जन्म नहीं लेते हैं। यह तो हम भी कहते हैं अच्छा।

देखो, यह मनोहर बेटी कितनी सर्विस करती है। सर्विस के लिए जैसे हैरान रहती है। चारों तरफ भागती रहती है। ऐसे को ही सर्विसेबुल कहा जाता है। शिवबाबा और यह बाबा भी कहते हैं ऐसे सर्विसएबुल बच्चे मुझे बहुत प्यारे लगते हैं। सर्विस नहीं करते हैं तो ज़रूर डिससर्विस में ही समय गंवाते होंगे। सर्विस का बड़ा शैक होना चाहिए। किसका कल्याण करने रास्ता बताना चाहिए। बाबा जानते हैं इनको सर्विस बिगर सुख नहीं आता। बाप का अन्दर का भी प्यार रहता है। अन्दर की प्यार की और बाहर की प्यार की बाबा पास बहुत युक्ति है। अच्छी सर्विस करने वाले पर तो कुर्बान जास्ती है।

प्रदर्शनी में तुम कितना समझाते हो। बड़े–2 ऑफिर्सस आते हैं उस समय कहेंगे यह बहुत अच्छा नॉलेज है। सभी को मिलनी चाहिए। खुद नहीं लेंगे। फिर भी हर्जा नहीं है। जब भीड़ पड़ेंगे, इतफाक होगा तो याद आवेगा। मशानी में जाने समय वैराग्य आता है ना। तुम्हारे लिए वैराग्य की बात नहीं। तुम तो कहते हैं हम पढ़ते हैं जिससे ऊँच पद मिलता है ड्रामा अनुसार। सतयुग में तो तुमको बहुत सुख है। वहां ऐसी कोई बात नहीं। होती तो तुम एवर हेल्दी बनते हो। अभी तुमको ज्ञान मिला है। ओमशान्ति।

शिवबाबा याद है?